REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय पर अभिभावक की शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन (मऊ जिले के संदर्भ में)''

Jai Nath Yadav[1] and Dr. Bhawana Soneji[2]
[1]Research scholar ,School Of Education , Rani Durgawati Vishwavidhyalaya , Jabalpur.
[2]Principal , Dr. Radhakrishna College Of Education , Jabalpur.

संक्षेप

आत्म प्रत्यय की दृष्टि से वर्तमान युग की आवश्यकता के अनुसार बच्चों की शिक्षा में अभिभावक का क्या योगदान है ? क्या सभी अभिभावक अपने बच्चों को शिक्षण पर यथोचित सहयोग देने में समर्थ हैं ? प्रस्तुत लघु शोध पत्र के माध्यम से माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय पर अभिभावक की शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य छात्र–छात्राओं के आत्म प्रत्यय पर अभिभावक की शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना है। न्यादर्श स्वरूप उच्च मध्यम एवं निम्न स्तरीय अभिभावकों के 180 छात्र एवं छात्राओं का चयन किया गया। न्यादर्श से प्राप्त बालक–बालिकाओं का आत्म प्रत्यय मापने हेतु आत्म प्रत्यय मापनी परीक्षण (एस.पी. अहलूवालिया) का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष स्वरूप पाया कि बालक–बालिकाओं के आत्म प्रत्यय पर अभिभावक की शिक्षा का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है क्योंकि विभिन्न शैक्षणिक स्तर अभिभावकों के आत्म प्रत्यय में अंतर नहीं पाया है।

प्रस्तावना

वर्तमान समय में देखा जाए तो शिक्षा की उपयोगिता हमें हर समय महसूस होती है, अर्थात शिक्षा की उपयोगिता जीवन के हर कदम पर आभास की जाती है वास्तविकता तो यह है कि मानव समाज के विकास में परिवार एक ऐसी आधारभूत इकाई समूह है जिसका बच्चों की शिक्षा में महत्व कम नहीं हुआ हैं। इसका कारण यह है कि नवजात शिशु अपने जीवन का शुभारम्भ परिवार के साथ ही आरंभ करता है तथा इसी समूह में रहते हुए उसे जीवन की विभिन्न प्रकार की शिक्षा प्राप्त होती है। नवजात शिशु के विकास में परिवार का महत्वपूर्ण योगदान होता है। जैसे–जैसे बच्चे की आयु में वृद्धि होती है, वैसे–वैसे परिवार द्वारा उसमें उन सभी मानवीय गुणों का विकास होता है। जैसे– सहयोग, सौहार्द्र, सहानुभूति आदि– रेमाण्ट के अनुसार "घर ही वह स्थान है, जहाँ बालक में सभी महान गुण विकसित होते है। घर में ही घनिष्ट प्रेम की भावनाओं का विकास होता है। यही पर बालक उदारता और अनुदारता निःस्वार्थ और स्वार्थ, न्याय और अन्याय, सत्य और असत्य, परिश्रम और आलस्य में अन्तर सीखता है।'' जिनकी आवश्यकता उसे आगे चलकर एक सुयोग्य एवं चरित्रवान नागरिक के रूप में बच्चों को बनानें और बिगाड़ने का उत्तरदायित्व अब भी अभिभावकों का ही है।

शिक्षा का व्यक्ति के जीवन में बहुत महत्व है। शिक्षित अभिभावक ही अपने बच्चों के चतुर्दिक विकास में सहयोग कर सकता है। तथा सुशिक्षित माता–पिता अपने बच्चों में अच्छे संस्कार विकसित कर सकता है। अशिक्षित अभिभावक अपने

आस–पास के वातावरण से अनजान अर्थात अनभिज्ञ रहता है इसलिए उसे हमेशा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। अपनी समस्या का समाधान स्वयं नहीं निकाल पाता है। ऐसे निम्न शिक्षा प्राप्त अभिभावक की जरा सी ना समझी का प्रतिफल उनकी संतानों को जीवन भर परेशानी का सामना करना पड़ता है।

हमारे देश में शिक्षा प्रसार की ओर बहुत अधिक ध्यान दिया गया तथा उसके लिए शासकीय एवं अशासकीय कदम भी उठाये गये हैं पर अभी भी अशिक्षित अभिभावक की संख्या अधिक देखी गयी है। सरकार कितना भी प्रयास करे जब तक माता–पिता अपने बच्चों को पढ़ाने और लिखाने की आवश्यकता महसूस नहीं करेंगें तब तक संतोषजनक उपलब्धियाँ हासिल कर पाना मुश्किल होगा। आज के बच्चे कल के भविष्य हैं, इस देश का भविष्य इन्ही बच्चों के हाथों में होगा और जब बच्चे अशिक्षित होगें तो देश का भविष्य उज्जवल नहीं होगा

अभिभावक को शिक्षा के अनौपचारिक एवं सक्रिय साधन के रूप में देखा गया है। शिक्षा एक बहुउद्देशीय प्रक्रिया है। उसके उद्देश्य समय की विचार धारा और आवश्यकताओं के अनुसार बदलते रहते हैं। हमने कुछ मुख्य उद्देश्यों की प्राप्ति में अभिभावक के सहयोग की चर्चा की है। शिक्षा में अन्य उद्देश्य की प्राप्ति में भी अभिभावक के साथ की अत्यंत आवश्यकता हैं क्योंकि एक ओर वे उन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए स्वयं प्रयत्नशील रहते हैं तथा दूसरी और वे उन उद्देश्यों की प्राप्ति में शालाओं की सहायता करते हैं। उदाहरण के लिए राष्ट्रीय एकता और अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना के विकास को ही ले लीजिए, प्रत्येक विद्यालय में इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिये अनेक कार्य किए जाते हैं। इन कार्यो में राष्ट्र भाषा का प्रयोग, राष्ट्रगान तथा राष्ट्रगीत का सम्मान विभिन्न भाषाओं और सांस्कृतियों का सम्मान और अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की भाषाओं का ज्ञान मुख्य हैं। विद्यालय इन कार्यो को तब तक पूरा नहीं कर सकते जब तक परिवार इसके लिए सहमति और सहयोग प्रदान नहीं करेंगें।

आत्म प्रत्यय की दृष्टि से वर्तमान युग की आवश्यकता के अनुसार बच्चों की शिक्षा में अभिभावक का क्या योगदान है? क्या सभी अभिभावक अपने बच्चों को शिक्षण पर यथोचित सहयोग देने में समर्थ हैं? प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों के आत्म–प्रत्यय पर अभिभावक की शिक्षा के प्रभाव का पता लगाने का प्रायस किया गया है।

उद्देश्यः–

1. छात्रों के आत्म प्रत्यय पर अभिभावक की शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन।
2. छात्राओं के आत्म प्रत्यय पर अभिभावक की शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन ।
3. छात्र–छात्राओं के आत्म प्रत्यय पर अभिभावक की शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन ।

परिकल्पनाएँः–

1. छात्रों के आत्म प्रत्यय पर अभिभावक की शिक्षा का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. छात्राओं के आत्म प्रत्यय पर अभिभावक की शिक्षा का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. छात्र–छात्राओं के आत्म प्रत्यय पर अभिभावक की शिक्षा का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

चर– प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शोधकर्ता द्वारा निम्न चरों को लिया गया है।
स्वतंत्र चर– अभिभावक की शिक्षा **आश्रित चर**– आत्म प्रत्यय **नियंत्रित चर**– कक्षा 8 वी तथा लिंग

अध्ययन विधि– प्रस्तुत शोध कार्य सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।
न्यादर्श :– प्रस्तुत शोध कार्य हेतु न्यादर्श निम्नानुसार लिया गया है –उत्तर प्रदेश के मऊ जिले के माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 8वी के 180 विद्यार्थियों को चुना गया है।

अभिभावक का शैक्षिक स्तर	छात्र	छात्रा	योग
उच्च	30	30	60
मध्य	30	30	60
निम्न	30	30	60
योग	90	90	180

उपकरण :–

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु आंकड़ों के संकलन हेतु निम्न उपकरण का प्रयोग किया गया है

- आत्म प्रत्यय मापनी– एस.पी. अहलूवालिया (सागर)

परिणामों का विश्लेषण :– प्रस्तुत शोध कार्य हेतु परिकल्पनाओं के आधार पर परिणामों का विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है –

तालिका क्रमांक–01

अभिभावक के शैक्षिक स्तर (उच्च, मध्य एवं निम्न) का छात्रों के आत्म प्रत्यय पर पड़ने वाले प्रभाव सम्बन्धी तुलनात्मक परिणाम

अभिभावक का शैक्षिक स्तर	पदों का योग	मध्यमान	मानक विचलन
उच्च	40	46.83	4.98
मध्य	38	48.13	4.14
निम्न	12	47.67	3.80

प्रसरण विश्लेषण की सारांश तालिका

प्रसरण के स्त्रोत	स्वतंत्रता के अंश	वर्गों का योग	मध्यमान वर्ग	'एफ' अनुपात	''पी'' मान
समूहों के मध्य	2	33.71	16.85	0.83	>0.05
समूहों के अंतर्गत	87	1760.78	20.24		

स्वतंत्रता के अंश – 2, 87 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 3.11

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 4.88

उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट हो जाता है कि छात्रों के आत्म–प्रत्यय पर अभिभावकों की उच्च, मध्य एवं निम्न शिक्षा, शैक्षिक स्तर पर प्रभाव नहीं पड़ता क्योकि उच्च, मध्य एवं निम्न समूहों के मध्य 'एफ' अनुपात 0.83 आया है। जो सांख्यिकीय दृष्टिकोण से 0.05 के लिए निर्धारित मान 3.11 से बहुत कम है।

उपरोक्त के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि अभिभावक के शैक्षिक स्तर (उच्च, मध्य एवं निम्न) का छात्रों के आत्म प्रत्यय पर प्रभाव नहीं पडता है।

तालिका क्रमांक–02

अभिभावक के शैक्षिक स्तर (उच्च, मध्य एवं निम्न) का छात्राओं के आत्म प्रत्यय पर पड़ने वाले प्रभाव सम्बन्धी तुलनात्मक परिणाम

अभिभावक का शैक्षिक स्तर	पदों का योग	मध्यमान	मानक विचलन
उच्च	39	47.90	4.29
मध्य	39	49.28	5.51
निम्न	12	51.00	2.73

प्रसरण विश्लेषण की सारांश तालिका

प्रसरण के स्त्रोत	स्वतंत्रता के अंश	वर्गों का योग	मध्यमान वर्ग	'एफ' अनुपात	''पी'' मान
समूहों के मध्य	2	97.80	48.90	2.74	>0.05
समूहों के अंतर्गत	87	1553.49	17.86		

स्वतंत्रता के अंश – 2, 87

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 3.11

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 4.88

उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट हो जाता है कि छात्राओं के आत्म– प्रत्यय पर अभिभावकों की उच्च, मध्य एवं निम्न शैक्षिक स्तर का प्रभाव नहीं पडता क्योकि उच्च, मध्य, एवं निम्न समूहों के मध्य 'एफ' अनुपात 2.74 आया है जो सांख्यिकीय दृष्टिकोण से 0.05 के लिए निर्धारित मान 3.11 से कम है।

उपरोक्त के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि अभिभावक के शैक्षिक स्तर (उच्च, मध्य एवं निम्न) का छात्राओं के आत्म प्रत्यय पर प्रभाव नहीं पडता है।

तालिका क्रमांक–03
अभिभावक के शैक्षिक स्तर (उच्च, मध्य एवं निम्न) का छात्र–छात्राओं के आत्म प्रत्यय पर पड़ने वाले प्रभाव सम्बन्धी तुलनात्मक परिणाम

अभिभावक का भौक्षिक स्तर	पदों का योग	मध्यमान	मानक विचलन
उच्च	79	47.35	4.65
मध्य	77	48.71	4.34
निम्न	24	49.33	3.66

प्रसरण विश्लेषण की सारांश तालिका

प्रसरण के स्त्रोत	स्वतंत्रता के अंश	वर्गों का योग	मध्यमान वर्ग	'एफ' अनुपात	''पी' मान
समूहों के मध्य	2	107.68	53.84	2.78	>0.05
समूहों के अंतर्गत	177	3429.12	19.37		

स्वतंत्रता के अंश – 2, 177

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 3.06

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 4.75

उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट हो जाता है कि छात्र–छात्राओं के आत्म–प्रत्यय पर अभिभावकों की उच्च, मध्य एवं निम्न शैक्षिक स्तर का प्रभाव नहीं पडता है। क्योकि उच्च, मध्य एवं निम्न समूहों के मध्य 'एफ' अनुपात 2.78 आया है। जो सांख्यिकीय दृष्टिकोण से 0.05 के लिए निर्धारित मान 3.06 से कम है।

उपरोक्त के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि अभिभावक के शैक्षिक स्तर (उच्च, मध्य एवं निम्न) का छात्र–छात्राओं के आत्म प्रत्यय पर प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष –

1. अभिभावक की शिक्षा (उच्च, मध्य एवं निम्न) का प्रभाव छात्रों के आत्म प्रत्यय पर नहीं पड़ता है क्योंकि उच्च, मध्य एवं निम्न समूहों के मध्य 'एफ' अनुपात का मान 0.83 सांख्यिकीय दृष्टिकोण से 0.05 स्तर पर 3.11 से बहुत कम है।

2. अभिभावक की शिक्षा (उच्च, मध्य एवं निम्न) का प्रभाव छात्राओं के आत्म प्रत्यय पर नहीं पड़ता है क्योंकि उच्च, मध्य एवं निम्न समूहों के मध्य 'एफ' अनुपात का मान 2.74 प्राप्त हुआ है जो सांख्यिकीय दृष्टिकोण से 0. 05 स्तर पर निर्धरित मान 3.11 से कम है।

3. अभिभावक की शिक्षा (उच्च, मध्य एवं निम्न) का प्रभाव छात्र–छात्राओं के आत्म प्रत्यय पर नहीं पड़ता है क्योंकि उच्च, मध्य एवं निम्न समूहों के मध्य 'एफ' अनुपात का मान 2.78 प्राप्त हुआ है जो सांख्यिकीय दृष्टिकोण से 0.05 स्तर पर निर्धरित मान 3.06 से कम है।

संदर्भ ग्रंथ –

अरोरा, डॉ. संतोष (साँतवा संस्करण), **'अभिभावक शिक्षा'',** आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 2014

भटनागर, सुरेश, सक्सेना, अनामिका (2004), **''आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ'',** आर. लाल बुक डिपो

बिहारी लाल, डॉ. विश्वनाथ, त्रिपाठी नरेश चन्द्र, शिक्षा में नवाचार, श्री विनोद पुस्तक मंन्दिर आगरा, पंचम संस्करण– 2014

चौबे, डॉ. सरयू प्रसाद (नवीनतम संस्करण), **''शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार'',** विनोद पुस्तक भंडार

माथुर, डॉ. एस.एस. (1997), **''शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार''**, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा–2

पाठक, पी.सी. त्यागी जी.एस.डी. (1998), **''शिक्षा के सामान्य सिद्धांत'',** विनोद पुस्तक मंदिर आगरा–2,

शर्मा, राजेश कुमार, लघु शोध प्रबंध, सप्रत्यय व आत्म प्रत्यय पर आकांक्षा के स्तर का प्रभाव

शर्मा, आर.एन. (2003), **''शिक्षा तथा मनोविज्ञान में परा एवं अपरा सांख्यिकीय'',** आर. लाल बुक डिपो

श्रीवास्तव, डी.एन. एवं सिंह रंजीत, आधुनिक समाज मनोविज्ञान, तृतीय संशोधित एवं परिवर्तित संस्करण, 1978, हरि प्रसाद भार्गव, आगरा, पृष्ठ. 201

वर्मा, डॉ. प्रीति, श्रीवास्तव, डॉ. डी.एन. (2005), **''आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान,** आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर

LBP PUBLICATION